शिक्षा में हाँसियाकरण की समस्या और पॉलो क्रेरे का चिन्तन

डॉ0 राजीव मालवीय*

सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में हाँसियेकरण की समस्या एक ज्वलन्त मुद्दा है। वास्तव में समाज के कुछ वर्ग एवं जातियाँ समाज की मुख्य धारा से कटकर नारकीय जीवन व्यतीत कर रही है। शिक्षा में उनकी सहभागिता नगण्य है। इससे शिक्षा के सार्वभौमीकरण की संकल्पना की पूर्ति नहीं हो पा रही है। इस समस्या के समाधान में पाँलो फेरे का चिन्तन अत्यन्त उपादेय है। पालो फेरे का जन्म 1921 ई. में ब्राजील के रेसीफे नामक स्थान पर एक निर्धन परिवार में हुआ था। उन्होंने भुखमरी एवं गरीबी का सामना करके शिक्षार्जन किया और रेसीफ विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बने।

पालो फेरे का मानना था कि शिक्षा संवादात्मक होनी चाहिए न कि केवल ग्रहणात्मक। शिक्षा को निरन्तर मुक्ति की प्रक्रिया के रूप में अपनाया जाना चाहिए। शिक्षा जो वर्तमान समय में चल रही है। वह बैंकिंग माडल पर आधारित है। जिसमें शिक्षक विचारों, भावनाओं, प्रवृत्तियों का जमाकर्ता और शिक्षार्थी जमा करने वाली कतार में लगा रहता है। उत्पीडतों को सामाजिक न्याय एवं अधिकार दिलाने के लिए शिक्षा को कान्साइन्टजेशन मॉडल पर आधारित किया जाना चाहिए। पालो फेरे ने समाज में हाँशिये पर चले गये वर्गो के व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए एक व्यापक योजना प्रस्तुत किया है वह अत्यन्त उपादेय है। इसको अपनाकर उत्पीदितों एवं हासियेकरण की शैक्षिक समस्या का अन्त किया जा सकता है।

वर्तमान समय में हाँसियाकरण की समस्या शिक्षा के क्षेत्र में एक ज्वलन्त मुद्दा है। हाँसियाकरण को अंग्रेजी में ''मार्जिनलाइजेशन'' (Marginalisation) कहा जाता है। शब्द कोषों में इसके लिए अधिकारहीनता , शक्तिहीनता, प्रभावहीनता, निम्नीकरण आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। वास्तव में हमारा समाज अनेकों वर्गों, जातियों, धर्मो, सम्प्रदायों, क्षेत्रों में विभक्त है। समाज में रहने वाली कुछ वर्गों एवं जातियों की संस्थिति समाज की मुख्यधारा से इतनी कट गयी है। कि वे अपनी दयनीय स्थिति के कारण समाज से अलग–थलग महसूस कर रही हैं। समाज में इनको कोई तवज्जो नहीं दिया जा रहा है। समाज में न तो वे अपने अधिकारों की प्राप्ति कर पा रही हैं, न तो उनके पास इतनी शक्ति है कि वे देश में संचालित विविध योजनाओं, कार्यक्रमों एवं शिक्षा–व्यवस्था से जुड़कर लाभान्वित हो सकें। समाज की एक वर्ग एवं जातियाँ आज के तकनीकी एवं विकास परक युग में भी अक्षम, अयोग्य, खानाबदोश जीवन व्यतीत करने वाली, देश–दुनियाँ से पूरी तरह विरक्त होकर किसी तरह घूमकर, फुटपाथों पर सोकर, भिक्षाटन एवं निम्न स्तरीय कार्यो को करके अपना जीवन निर्वाह कर रही हैं।

हाँसियेकरण की समस्या के कारण भरसक प्रयास के बाद भी शिक्षा के सार्वभौमीकरण की संकल्पना की पूर्ति नहीं हो पा रही है। एल्विन (1963) का अभिमत है कि–किसी निम्न वंचित परिवार के लिए अपने बच्चों को स्कूल भेजना एक आर्थिक मुद्दा है, इससे उनकी पारम्परिक कार्यप्रणाली को बाधा पहुँचता है। बहुत से अभिभावक बच्चों की पढ़ाई का बोझ नहीं उठा सकते, क्योंकि स्वतंत्रता के बाद भी इन वर्गों की आर्थिक तथा जैविक परिस्थितियों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है।''

बी.डी शर्मा (1987) का मानना है कि–''हमारी शिक्षा की जड़ें हमारी परम्परा और संस्कृति से जुड़ी हुई नहीं है और हमारी सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में हमारे राष्ट्रीय लक्ष्यों के बारे में कोई स्पष्टता नहीं है, इसलिए शिक्षा सामाजिक उत्थान तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों में योगदान देने के स्थान पर विसंबंधन का साधन बनती जा रही है।''

निः संदेह समाज में हाँसिएकरण पर चली गयी जातियों एवं वर्गों के शैक्षिक उत्थान के बिना विकसित भारत के स्वप्न को साकार नहीं किया जा सकता। इस संदर्भ में आधुनिक क्रान्तिकारी शैक्षिक विचारक पालों फ्रेरे के चिन्तन का आश्रय लेना सर्वोत्तम है। हाँसियेपर जीवन व्यतीत करने वाले वर्गों एवं जातियों के शैक्षिक उत्थान के लिए पाँलो फ्रेरे ने ''उत्पीडितों का शिक्षाशास्त्र (Pedagogy of opressed) नामक ग्रन्थ लिखा है। इस ग्रन्थ में उत्पीडितों की शिक्षा के सम्बन्ध में लिखा है कि–''यदि भारत में शोषित जन साधारण के भाग्य को सुधारना है तो उन्हें इतना वास्तविकताओं से परिचित कराना होगा कि

* एम.डी.पी.जी. कालेज, प्रतापगढ

उनकी आत्मा को झकझोरा जा सके ओर वे अपने संघर्ष अथवा भाग्य परिवर्तन की लड़ाई स्वयं लड़ पाने में असमर्थ एवं विवश न बने रहे।'' एतदर्थ शिक्षा में व्याप्त हाँसियेकरण की समस्या के समाधानार्थ पाँलो फेरे के चिन्तन पर मंथन करना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है। प्रस्तुत शोध लेख में दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक प्रविधियों का अनुप्रयोग करके समस्या समाधान खोजने का प्रयास किया गया है।

पाँलो फेरे; व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आधुनिक क्रांतिकारी शैक्षिक विचारक पाँलो फ्रेरे का जन्म 1921 ई0 में ब्राजील के रेसीफे नामक स्थान पर एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। रेसीफे तीसरे विश्व के घोरतम निर्धन तथा पिछड़े क्षेत्रों में से था, फ्रेरे का परिवार भी अत्यन्त अभावग्रस्त परिवेश में जीवन गुजर–वसर कर रहा था। प्रथम विश्व युद्ध के प्रभावों ने 1929 में जब संयुक्त राज्य अमेरिका में आर्थिक संकट पैदा कर दिया तो उससे ब्राजील भी नहीं बच सका। पाल फ्रेरे का परिवार भी आर्थिक संकट की चपेट में आ गया और यही से उसे दिन–ब–दिन भूख की कचोटती पीड़ा का एहसास हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि फेरे भी स्कूल में पिछड़ गये, क्योंकि भूख ने उसमें एक प्रकार की निर्जीवता उत्पन्न कर दी थी। भूख का दर्द जितना गहरा होता जा रहा था उतना ही फेरे का एहसास पैना होता जा रहा था। यह दर्द उन्होंने अपने में ही नहीं, वरन् दूसरों में भी महसूस किया। जब फेरे 11 वर्ष के हुए तो भूख के विरुद्ध संघर्ष की प्रतिज्ञा ली। उन्होंने अनुभव किया कि समाज का सम्पन्न वर्ग, उत्पीड़ितों का शोषण कर रहा है। उत्पीड़न की संस्कृति को जारी रखने में सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था प्रमुख माध्यम बनी हुई है। ऐसी अवस्था में उत्पीडित मानवों में विवेचनात्मक चेतना जगाना सम्भव नहीं है। इसके लिए शिक्षा को मानव मुक्ति का सशक्त हथियार बनाने के लिए फेरे अपने देश की शोषित जनता के संघर्ष में सक्रिय रूप से शामिल हुए। इस दिशा में उन्होंने तीन पुस्तकों का प्रणयन भी किया–

पेडॉगाजी आफद आप्रेस्ड, कल्चरल एक्शन फार फ्रीडम, एजूकेशन फॉर फ्रीडम, एजूकेशन फॉर क्रिटिकल कांशमनेस।

प्रस्तुत अध्ययन उनके इन्ही तीनों पुस्तकों पर आधारित है।

शिक्षा; निरन्तर मुक्ति की प्रक्रिया

पालो फेरे का मानना है कि शिक्षा पर किसी एक विशेष वर्ग का आधिपत्य न होकर सभी के लिए समान रूप से सर्व सुलभ होनी चाहिए। जिससे समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग शिक्षा के माध्यम से निरन्तर मुक्ति की प्राप्ति की कर सकें। वास्तव में फेरे समाज के उत्पीड़ित या हाँसिए करण पर स्थित वर्गों की संस्थिति में परिवर्तन के लिए शिक्षा की भूमिका को क्रान्तिकारी ढंग से निभाने के पक्षधर थे। उनका मानना था शिक्षा संवाद की संवाहिका है, संवाद से जड़ता का समापन होता है। अतः शिक्षा को सम्प्रेषण या संवाद के रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए इसे ज्ञान का स्थानान्तरण नहीं मानना चाहिए। ज्ञान का स्थानान्तरण मानने से शिक्षा विवरण देने की बीमारी से पीड़ित हो जाती है। शिक्षा बैंक के समान सूचनाओं, विवरणों को जमा करने तक सीमित हो जाती है। शिक्षा की यह बैंकिग अवधारणा उत्पीडितों या हाँसियेकरण के शिकार लोगों के लिए उपादेय नहीं हो सकती अतः इसके लिए शिक्षा में खुलापन, संवादशीलता रचनात्मकता को महत्व देना होगा। शिक्षा में शिक्षक–शिक्षार्थी में संवादात्मक सम्बन्ध होना चाहिए, न कि सिर्फ ग्रहणात्मक। संवाद के द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर किसी प्रकार का दबाव नहीं बना सकता। शिक्षा द्वारा जब ऐसी परिस्थिति बन जायेगी तो शिक्षा निश्चित रूप से मानव मुक्ति की आधार शिला के रूप में प्रतिष्ठित होकर सभी वर्गों का विकास कर सकेगी।

शिक्षा की बैंकिंग अवधारणा

पॉलो फेरे का मानना है कि वर्तमान समय में शिक्षा बैंकिग अवधारणा पर आधारित है जिसमें केवल सूचनाओं, विवरणों, वृतान्तों आदि को जमा किया जाता है। इस बैंक में शिक्षक जमाकर्ता तथा शिक्षार्थी जमा करने की प्रक्रिया में लगे रहते हैं। सम्प्रेषण और संवाद के स्थान पर शिक्षक विज्ञाप्ति जारी करते हैं तथा डिपाजिटों का निर्माण करते हैं। शिक्षार्थी इन डिपाजिटों को धैर्य के साथ ग्रहण करते हैं, रटते हैं और दोहराते हैं। इसमें शिक्षार्थी के लिए शिक्षक द्वारा दिये जा रहे विवरणों को ग्रहण करने

संग्रह करने तथा उन्हें क्रय में लगाने के अलावा कोई कार्य नहीं होता है। इससे उनमें विवेक, विवेचना, परिवर्तन तथा सृजन की शक्ति समाप्त हो जाती है।

फेरे का मानना है कि बैंकिंग माडल पर आधारित शिक्षा उत्पीडितों एवं हाँसियेकरण पर स्थित व्यक्तियों के रचनात्मक विकास की सम्भावनाओं को समाप्त कर देती है।

फेरे ने शिक्षा के वैंकिंग मॉडल के स्थान पर कान्साइन्टजेशन मॉडल आफ एजूकेशन अपनाने का समर्थन किया है। उनका मानना है कि शिक्षा का यह मॉडल छात्रों को अपनी आत्मा की अनुभूति या अन्तः करण के विकास का अवसर देकर स्वयं अपनी मुक्ति के लिए उपाय एवं साधन खोजने को प्रोत्साहित करती है।

शिक्षा के उद्देश्य

पाँलो फेरे ने अपने ग्रन्थ 'उत्पीडितों का शिक्षण विज्ञान' में लिखा है कि–''लोग समाज में उत्पीडितों का निषेध करते हैं। उन्होने उत्पीडितों को सोचने, प्रश्न करने का अधिकार छीन लिया है। जिज्ञासु बनने का अधिकार सभी को है न कि केवल सम्पन्न लोगों को ही।'' अतः स्पष्ट है कि शिक्षा समाज के सभी लोगों को उनका अधिकार दिलाने में मददगार होनी चाहिए। यदि शिक्षा का अधिकार सभी को सर्वसुलभ होगा, सभी संयुक्त प्रयास से अपने कौशलों का सम्यक् उपयोग करेगें तभी समाज, व्यक्ति एवं विश्व सशक्त वन सकेगा।

शिक्षा मानवता का पोषण करने वाली होनी चाहिए। सहयोग, सेवा, प्रेम जैसे मूल्यों का विकास शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में की जानी चाहिए। इससे ही विभेदीकृत व्यवस्था का समापन हो सकेगा। शिक्षा द्वारा दलितों, शोषितों को साक्षर एवं शिक्षित बनाया जाना चाहिए। इससे ही सामाजिक न्याय एवं समाजवाद की प्रतिष्ठा हो सकेगी।

पाँलो फेरे मानव–मानव के बीच इंसानी रिस्तों के मानवीकरण के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपनी पुस्तकों में मानवीय संवेदनाओं को मुखरित करने का हर सम्भव प्रयास किया है। वे यह चाहते थे कि शिक्षा उत्पीड़ित मनुष्यों की सदियों पुरानी मान्यताओं को समाप्त करें और उनकी मुक्ति की प्रक्रिया का मानवीकरण करें। इंसानी रिश्तों का मानवीकरण तभी होगा, जब एक उन्मुक्त समाज में उन्मुक्त शिक्षा–व्यवस्था की व्यवस्था होगी, जिसमें मनुष्य और मनुष्य के बीच संवाद के लिए पूरा अवसर उपलब्ध हो। वास्तव में शिक्षा सम्प्रेषण एवं संवाद की प्रक्रिया है, यह केवल ज्ञान का हस्तानान्तरण नहीं है।

पाठ्यचर्या

पाँलोफेरे वर्तमान समय में प्रचलित पाठ्यचर्या को उत्पीडितों के लिए संकुचित, बोझिल एवं व्यक्तित्व विकास में बाधक मानते हैं। उनका दृष्टिकोण है कि पाठ्यचर्या वैश्विक परिवर्तनों से आच्छादित होना चाहिए। पाठ्यचर्या लोकतांत्रिक मान्यताओं के अनुरूप, छात्र केन्द्रित सृजनात्मक, मूल प्रवृत्तियों की संतुष्टि करने वाली होनी चाहिए। पाठ्यचर्या में उत्पीडितों के लिए कल्याणकारी मूल्यों को स्थान दिया जाना चाहिए। उनकी सामाजिक माँग को विशेष तवज्जो दिया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या व्यापक होनी चाहिए जिससे लोग अपनी क्षमता, आवश्यकता के अनुरूप ज्ञानार्जन कर सकें।

शिक्षण विधि

पाँलोफेरे का दृष्टिकोण है कि शिक्षण–विधि ऐसी होनी चाहिए जो लोगों को सीखने के प्रति उत्सुकता का जागरण करे। अपने बारे में, कार्य के बारे में परिवर्तन के बारे में अच्छी सोच विकसित करें। शिक्षण विधि सरल, रोचक, जिज्ञासा की पूति करने वाली होनी चाहिए। शिक्षण विधि विद्यार्थियों के निजी अनुभव से युक्त भाषा, संस्कृति तथा परम्परा से ओत–प्रोत होनी चाहिए। शिक्षण–विधि जितनी व्यवहारिक एवं दैनिक क्रियावृत्ति से ओत–प्रोत होगी, विद्यार्थी उतनी ही रूचि, ओजस्विता, मनोवेग से ज्ञानार्जन में सक्षम बन सकेगें। शिक्षण विधि मूलतः संवाद विधि पर केन्द्रित होनी चाहिए।

निष्कर्ष

आधुनिक शिक्षा–चिन्तकों में समाज के दलितों, उत्पीडतों को सामाजिक न्याय दिलाने हेतु शिक्षा की प्रासंगिक भूमिका को रेखांकित करने में पालो फेरे का अप्रतिम स्थान है। वास्तव में पालो फेरे के शैक्षिक विचारों से समाज में व्याप्त द्वन्दात्मक अन्तर्विरोधों की भूमिका तथा उनके समाधान के परिप्रेक्ष्य में ही समझाा जा सकता है। पालो फेरे शिक्षा को सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि से जोड़ने का ही कार्य नहीं किया,

अपितु शिक्षा को क्रियात्मकता, व्यवहारिकता एवं जमीनी पहलूओं से संम्पृक्त करने का स्तुत्य कार्य किया। पालो फेरे का मानना था कि दलितों एवं उत्पीडतों को शिक्षा देने का कार्य वहीं व्यक्ति या संस्था कर सकती है जो संकीर्णतावाद से ग्रसित न हो जो मूलवादी और मानव–मुक्ति के प्रति कटिवद्ध एवं प्रतिवद्ध हो। जो व्यक्ति या संस्था इन विशेषताओं से ओत–प्रोत होगें वे उतनी ही वास्तविकता से दलितों, उत्पीड़तों की वस्तुस्थिति के तह तक जायेगा, उनकी जरूरतों, आकांक्षाओं को समझ सकेगा और उनमें अच्छी तरह से परिवर्तन ला सकेगा। ऐसे व्यक्तियों एवं संस्थाओं को लोगों से मिलने–जुलने तथा संवाद स्थापित करने में कोई भय नहीं होगा। इससे वे उत्पीडितों के मुक्तिदाता के रूप में शिक्षा को निरन्तर मुक्ति की प्रक्रिया के रूप में गतिशील बनाने में सार्थक भूमिका अदा कर सकेगें। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी यह मानते थे कि–''शिक्षा की मुख्य भूमिका, विश्व में प्रेम और शान्ति का वातावरण बनाना है, जिसके लिए आज समस्त मानवता भूखी है।'' पालो फेरे यह मानते थे कि वर्तमान शिक्षा केवल विवरण विद्यार्थी को देने की बीमारी से पीडित है। शिक्षा बैंकिंग मॉडल की अनुयायी है। अतः इस मॉडल को समाप्त करके शिक्षा में कान्साइन्टजेशन मॉडल को अपनाया जाना चाहिए। यह एक ऐसा मॉडल है जो विद्यार्थियों को स्वयं अपनी मुक्ति के लिए उपाय एवं साधन खोजने को प्रोत्साहित करता है। वास्तव में पालो फेरे का यह विचार समाज के कुछ वर्गों का शिक्षा पर होते अधिपत्य को समाप्त करने तथा समतावादी शिक्षा–व्यवस्था को प्रश्रय देता है।

पालोफेरे का शैक्षिक चिंतन समतामूलक समाज की स्थापना दलितों, उत्पीडतों को उनका अधिकार दिलाने में एक क्रान्तिकारी विचारधारा प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में भारतीय समाज एवं शिक्षा की अनेकों समस्याओं के समाधान में पालफेरे के उत्कृष्ट विचार अत्यन्त समसामयिक एवं समीचीन हैं।

पालोफेरे समाज में हाशिये पर चले गये वर्गो के व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु शिक्षा की जो योजना प्रस्तुत किया है वह समाज के अन्तिम व्यक्ति को बंधन की जंजीर से मुक्त कराने की दिशा में प्रासंगिक अवश्य है, किन्तु पालो फेरे के शिक्षा दर्शन को भारतीय परिस्थिति में ढालने एवं व्यवहारिक स्वरुप प्रदान करने के लिए इस पर चिन्तन, मनन तथा शोध की भी नितान्त आवश्यकता है।

संदर्भ :

1. फेरे पालो; पैडागॉंजी ऑफ द आस्प्रेड; कान्टीन्यूटी प्रेस, न्ययार्क 2000
2. फेरे पॉंलो; एजूकेशन फार क्रिटिकल कांससनेस; शील्ड एण्ड वार्ड, लन्दन 1973
3. शर्मा बी.डी.; शिक्षा, समाज और व्यवस्था; म0प्र0 हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल 1987
4. पाण्डेय आर.एस.; विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री; अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा 2005
5. इवान इलिच; डीस्कूलिंग एण्ड सोसाइटी; पेंगुइन सं0 1973